3

बच्चों की सच्ची कहानियां

Beta Ho To Aisa (Hindi)

बेटा हो तो ऐसा !

(मअ़ ख़ट मिठ्ठी गोलियां, टॉफ़ियां और चॉक्लेट)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

तालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।)

(बेटा हो तो ऐसा !)

येह रिसाला (**बेटा हो तो ऐसा !**)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस,
अलिफ़ की मस्जिद के सामने,तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बेटा हो तो ऐसा !

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से हाथ मिलाऊंगा। (ابن بشکوال ص ۹۰ حدیث ۹۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीनों रात एक त़रह़ का ख़्वाब

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **ज़ुल ह़ज** की **आठवीं** रात एक ख़्वाब देखा जिस में कोई कहने वाला कह रहा है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने बेटे को ज़ब्ह़ करने का हुक्म देता है।" आप सुब्ह़ से शाम तक इस बारे में ग़ौर फ़रमाते रहे कि येह ख़्वाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है या शैत़ान की जानिब से ? इसी लिये **आठ ज़ुल ह़ज** का नाम **यौमुत्तरवियह** (या'नी सोच बिचार का दिन) रखा गया। **नवीं** रात फिर वोही ख़्वाब देखा और सुब्ह़ यक़ीन कर लिया कि येह हुक्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, इसी लिये 9 **ज़ुल ह़ज**

को **यौमे अ़-रफ़ा** (या'नी पहचानने का दिन) कहा जाता है। **दसवीं रात** फिर वोही ख़्वाब देखने के बा'द आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सुब्ह़ इस ख़्वाब पर अ़मल करने या'नी **बेटे की क़ुरबानी** का पक्का इरादा फ़रमा लिया जिस की वज्ह से 10 **ज़ुल ह़ज** को **यौमुन्नह़र** या'नी "ज़ब्ह़ का दिन" कहा जाता है। (تفسیرِ کبیر ج۹ص۳٤٦)

"बेटे की क़ुरबानी" से रोकने की शैत़ान की नाकाम कोशिशें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर अ़मल करते हुए **बेटे की क़ुरबानी** के लिये ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब अपने प्यारे बेटे ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जिन की उ़म्र उस वक़्त 7 साल (या 13 साल या इस से

थोड़ी ज़ाइद) थी ले कर चले । **शैत़ान** उन की जान पहचान वाले एक शख़्स की सूरत में ज़ाहिर हुवा और पूछने लगा : **ऐ इब्राहीम** ! कहां का इरादा है ? आप ने जवाब दिया : एक काम से जा रहा हूं। उस ने पूछा : क्या आप **इस्माईल** को ज़ब्ह़ करने जा रहे हैं ? ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : क्या तुम ने किसी बाप को देखा है कि वोह अपने बेटे को ज़ब्ह़ करे ? शैत़ान बोला : जी हां, आप को देख रहा हूं कि आप इसी काम के लिये चले हैं ! आप समझते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को इस बात का हुक्म दिया है । ह़ज़रते **इब्राहीम** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने

मुझे इस बात का हुक्म दिया है तो फिर मैं उस की फ़रमां बरदारी करूंगा । यहां से मायूस हो कर शैत़ान ह़ज़रते **इस्माईल** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अम्मीजान ह़ज़रते **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आया और उन से पूछा : इब्राहीम आप के बेटे को ले कर कहां गए हैं ? ह़ज़रते हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया : वोह अपने एक काम से गए हैं । शैत़ान ने कहा : वोह उन्हें ज़ब्ह़ करने के लिये ले गए हैं । ह़ज़रते **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : क्या तुम ने कभी किसी बाप को देखा है कि वोह अपने बेटे को ज़ब्ह़ करे ? शैत़ान ने कहा : वोह येह समझते हैं कि

बेटा हो तो ऐसा !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें इस बात का हुक्म दिया है। येह सुन कर ह़ज़रते **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर ऐसा है तो उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) कर के बहुत अच्छा किया।" इस के बा'द शैत़ान ह़ज़रते **इस्माईल** عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास आया और उन्हें भी इसी त़रह़ से बहकाने की कोशिश की लेकिन उन्हों ने भी येही जवाब दिया कि अगर मेरे अब्बूजान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर मुझे ज़ब्ह़ करने ले जा रहे हैं तो बहुत अच्छा कर रहे हैं।

(مُستَدرَک ج۳ص۴۲۶ رقم۴۰۹۴ مُلَخَّصًا)

शैतान को कंकरियां मारीं

शैत़ान को कंकरियां मारीं

जब शैत़ान बाप बेटे को बहकाने में नाकाम हुवा और "जमरे" के पास आया तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे "सात कंकरियां" मारीं, कंकरियां मारने पर शैत़ान आप के रास्ते से हट गया। यहां से नाकाम हो कर शैत़ान "दूसरे जमरे" पर गया, फ़िरिश्ते ने दोबारा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा : "इसे मारिये।" आप ने उसे सात कंकरियां मारीं तो उस ने रास्ता छोड़ दिया। अब शैत़ान "तीसरे जमरे" के पास पहुंचा, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़िरिश्ते के कहने

पर एक बार फिर सात कंकरियां मारीं तो शैत़ान ने रास्ता छोड़ दिया।[1] शैत़ान को तीन मक़ामात पर कंकरियां मारने की याद बाक़ी रखी गई है और आज भी ह़ाजी इन तीनों जगहों पर कंकरियां मारते हैं।

बेटा कुरबानी के लिये तय्यार

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ले कर कोहे सबीर पर पहुंचे तो उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ख़बर दी, जिस का ज़िक्र कुरआने करीम में इन अल्फ़ाज़ में है :

مدینہ

1 : تفسیرِ طبری ج۱۰ص ۵۰۹،۵۱۶ , दो रिवायात का खुलासा।

बेटा हो तो ऐसा !

يٰبُنَيَّ اِنِّيْۤ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :
ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब देखा मैं तुझे ज़ब्ह करता हूं अब तू देख तेरी क्या राय है ?

फ़रमां बरदार बेटे ने येह सुन कर जवाब दिया :

يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :
ऐ मेरे बाप ! कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है, ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर (या'नी सब्र करने वाला) पाएंगे।

(پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۰۲)

येह फ़ैज़ाने नज़र था या कि मक्तब की करामत थी
सिखाए किस ने इस्माईल को आदाबे फ़रज़न्दी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुझे रस्सियों से मज़्बूत़ बांध दीजिये

ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने वालिदे मोह़तरम से मज़ीद अ़र्ज़ की : अब्बूजान ! ज़ब्ह़ करने से पहले मुझे रस्सियों से मज़्बूत़ बांध दीजिये ताकि मैं हिल न सकूं क्यूं कि मुझे डर है कि कहीं मेरे सवाब में कमी न हो जाए और मेरे **ख़ून** के छींटों से अपने कपड़े बचा कर रखिये ताकि इन्हें देख कर मेरी अम्मीजान

ग़मगीन न हों। छुरी ख़ूब तेज़ कर लीजिये ताकि मेरे गले पर अच्छी त़रह़ चल जाए (या'नी गला फ़ौरन कट जाए) क्यूं कि मौत बहुत सख़्त होती है, आप मुझे ज़ब्ह़ करने के लिये पेशानी के बल लिटाइये (या'नी चेहरा ज़मीन की त़रफ़ हो) ताकि आप की नज़र मेरे चेहरे पर न पड़े और जब आप मेरी **अम्मीजान** के पास जाएं तो उन्हें मेरा सलाम पहुंचा दीजिये और अगर आप मुनासिब समझें तो मेरी क़मीस उन्हें दे दीजिये, इस से उन को तसल्ली होगी और सब्र आ जाएगा। ह़ज़रते **इब्राहीम** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! तुम **अल्लाह तआ़ला** के हुक्म पर अ़मल करने में मेरे कैसे उ़म्दा मददगार

साबित हो रहे हो ! फिर जिस त़रह़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कहा था उन को उसी त़रह़ बांध दिया, अपनी छुरी तेज़ की, ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पेशानी के बल लिटा दिया, उन के चेहरे से नज़र हटा ली और उन के गले पर छुरी चला दी, लेकिन छुरी ने अपना काम न किया या 'नी गला न काटा। इस वक़्त ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य नाज़िल हुई : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाया, हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को, बेशक येह रोशन जांच थी और हम ने एक बड़ा ज़बीह़ा उस के फ़िदये में दे कर उसे बचा लिया।" (تفسیر خازن ج ٤ ص ٢٢ ملخصاً)

जन्नत का मेंढा

जन्नत का मेंढा

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब हज़रते **इस्माईल** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़ब्ह करने के लिये ज़मीन पर लिटाया तो **अल्लाह तआ़ला** के हुक्म से हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام बत़ौरे फ़िदया जन्नत से एक **मेंढा** (या'नी दुम्बा) लिये तशरीफ़ लाए और दूर से ऊंची आवाज़ में फ़रमाया : اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر , जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह आवाज़ सुनी तो अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया और जान गए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाली आज़्माइश का वक़्त गुज़र चुका है और बेटे की जगह फ़िदये में **मेंढा** भेजा गया है लिहाज़ा ख़ुश हो कर फ़रमाया :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر, जब हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह सुना तो फ़रमाया : اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْد , इस के बा'द से इन तीनों पाक हज़रात के इन मुबारक अल्फ़ाज़ की अदाएगी की येह सुन्नत क़ियामत तक के लिये जारी व सारी हो गई। (بِنایَہ شرح ھِدایَہ ج۳ص۳۸۷)

जन्नती मेंढे के गोश्त का क्या हुवा ?

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के फ़िदये में जो **मेंढा** (या'नी दुम्बा) ज़ब्ह फ़रमाया था, उस के बारे में अक्सर मुफ़स्सिरीन का कहना येह है कि वोह **मेंढा** (या'नी दुम्बा) जन्नत से आया था और येह वोही **मेंढा** था जिस को हज़रते

आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बेटे हज़रते हाबील رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कुरबानी में पेश किया था।[1] उस मेंढे का गोश्त पकाया नहीं गया बल्कि उसे दरिन्दों (या'नी फाड़ खाने वाले जानवरों) और परिन्दों ने खा लिया। (تفسیر جمل ج٦ ص٣٤٩ مُلَخَّصًا)

जन्नती मेंढे के सींग

हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस मेंढे (या'नी दुम्बे) के **सींग** अ़र्सए दराज़ तक का'बा शरीफ़ में रखे रहे यहां तक कि जब का'बा शरीफ़ में आग लगी तो वोह **सींग** भी जल गए।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٥ ص٥٨٩ حدیث ١٦٦٣٧)

مدینہ

1 : تفسیرِ خازن ج٤ ص٢٤ مُلَخَّصًا

का'बा शरीफ़ में आग कब और किस त़रह़ लगी ?

का'बा शरीफ़ में आग लगने और उस में **सींग** जल जाने के तअ़ल्लुक़ से "सवानेह़े करबला" में दिये हुए मज़्मून की रोशनी में अ़र्ज़ है : नवासए रसूल, इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते **इमामे ह़ुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के तक़्रीबन दो साल बा'द **यज़ीदे पलीद** ने मुस्लिम बिन उ़क़्बा को बारह हज़ार या बीस हज़ार सिपाहियों की फ़ौज दे कर **मदीनतुल मुनव्वरह** पर ह़म्ला करने भेजा, ज़ालिम यज़ीदियों ने मदीना शरीफ़ में बे इन्तिहा ख़ूनरेज़ी की, **सात हज़ार सह़ाबए किराम** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان समेत दस हज़ार से ज़ियादा अफ़राद को शहीद किया, अहले मदीना के घर लूट लिये, इन्तिहाई

शर्मनाक ह़-र-कतें कीं, यहां तक कि मस्जिदे न-बवी शरीफ़ के सुतूनों (PILLARS) के साथ घोड़े बांधे। फिर येह फ़ौज मक्का शरीफ़ पहुंची, मिन-जनीक़ (जो कि पथ्थर फेंकने का आला होता था उस) के ज़रीए पथ्थर बरसाए, इस से ह़रम शरीफ़ का सह़ने मुबारक पथ्थरों से भर गया मस्जिदुल ह़राम के सुतून (PILLARS) शहीद हो गए और **का'बतुल्लाह** के **ग़िलाफ़ शरीफ़** और छत मुबारक को उन ज़ालिमों ने आग लगा दी, **का'बतुल्लाह शरीफ़ की छत में ह़ज़रते इस्माईल** عَلَيْهِ السَّلَام **के फ़िदये में क़ुरबान होने वाले (जन्नती) दुम्बे के जो मुबारक सींग तबर्रुक के त़ौर पर महफ़ूज़ थे वोह भी उस आग में जल गए।** जिस रोज़ या'नी 15 रबीउ़ल अव्वल 64 सि.हि. को का'बा शरीफ़

की बे हुरमती हुई थी उसी रोज़ मुल्के शाम के शह्र "हिम्स" में 39 साल की उ़म्र में **यज़ीदे पलीद** मर गया। इस बद नसीब ने जिस इक़्तिदार के नशे में बद मस्त हो कर इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ख़ानदाने रिसालत के महक्ते फूलों को ज़मीने करबला पर ख़ाको ख़ून में तड़पाया, मक्के मदीने वालों पर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाईं, उस तख़्ते हुकूमत पर उसे **सिर्फ़ तीन बरस सात माह** "शै-त़नत" करने का मौक़अ़ मिला।[1] इस की मौत में किस क़दर इ़ब्रत है !...अल मौत... अल मौत... अल मौत...

न यज़ीद की वोह जफ़ा रही, न शिमर का ज़ुल्मो सितम रहा
जो रहा तो नाम हुसैन का, जिसे याद रखती है करबला

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : सवानेहे करबला, स. 178, मुलख़्ख़सन

क्या हर कोई ख़्वाब देख कर अपना बेटा ज़ब्ह कर सकता है ?

याद रहे ! कोई शख़्स ख़्वाब या ग़ैबी आवाज़ की बुन्याद पर अपने या दूसरे के बच्चे या किसी इन्सान को ज़ब्ह नहीं कर सकता, करेगा तो सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क़रार पाएगा। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जो ख़्वाब की बिना पर अपने **बेटे की क़ुरबानी** के लिये तय्यार हो गए येह ह़क़ है क्यूं कि आप **नबी** हैं और नबी का ख़्वाब वह़्ये इलाही होता है। इन ह़ज़रात का इम्तिह़ान था, ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام **जन्नती दुम्बा** ले आए और **अल्लाह तआ़ला** के हुक्म से ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने प्यारे बेटे के बजाए उस जन्नती दुम्बे को ज़ब्ह फ़रमा दिया। ह़ज़रते

इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام की इस अनोखी कुरबानी की याद ता क़ियामत क़ाइम रहेगी और मुसल्मान हर साल ब-क़रह ईद में मख़्सूस जानवरों की कुरबानियां पेश करते रहेंगे । (कुरबानी के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** का रिसाला "**अब्लक़ घोड़े सुवार**" पढ़िये)

इस्माईल के मा'ना

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बहुत बड़ी उ़म्र तक बे औलाद थे, 99 साल की उ़म्र में आप عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام अ़त़ा किये गए ।[1] ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बेटे की दुआ़एं मांग कर कहते थे :

مدینہ

1 : تفسیرِ قرطبی ج ٥ ص٢٦٥

"اِسْمَعْ یَا اِیْل" اِسْمع के मा'ना हैं "सुन" और "اِیْل" इबरानी ज़बान में **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ का नाम, इस त़रह़ "اِسْمَعْ یَا اِیْل" के मा'ना हुए : "ऐ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ! मेरी सुन ले।" जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए तो इस दुआ़ की यादगार में आप का नाम "**इस्माईल**" रखा गया। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 688 माख़ूज़न)

"अबुल अम्बिया" के दस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के 10 मख़्सूस फ़ज़ाइल

● **रसूले** पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सब से अफ़्ज़ल हैं ● ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही अपने बा'द आने वाले सारे

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वालिद हैं ● हर आस्मानी दीन में आप ही की पैरवी और इत़ाअ़त है ● हर दीन वाले आप की ता'ज़ीम करते हैं ● आप ही की याद **क़ुरबानी** है ● आप ही की यादगार **ह़ज** के अरकान हैं ● आप ही का'बा शरीफ़ की पहली ता'मीर करने वाले या'नी इसे घर की शक्ल में बनाने वाले हैं ● जिस पथ्थर (मक़ामे इब्राहीम) पर खड़े हो कर आप ने का'बा शरीफ़ बनाया वहां क़ियाम और सज्दे होने लगे ● क़ियामत में सब से पहले आप ही को उ़म्दा लिबास अ़त़ा होगा इस के फ़ौरन बा'द हमारे हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ● मुसल्मानों के फ़ौत हो जाने

वाले बच्चों की आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और आप की बीवी साहिबा हज़रते सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا आलमे बरज़ख़ में परवरिश करते हैं।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 682 मुलख़्ख़सन)

शेर क़दम चाटने लगे

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर दो भूके शेर छोड़े गए (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान देखिये कि) वोह भूके होने के बा वुजूद आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को चाटने और सज्दा करने लगे। (اَلزُّهد لِلامام اَحمد بن حنبل ص١١٤)

रैत की बोरियों से सुर्ख़ गन्दुम निकले !

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ग़ल्ला (या'नी

अनाज) नहीं मिला, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सुर्ख़ रैत के पास से गुज़रे तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस से बोरियां भर लीं जब घर तशरीफ़ लाए तो घर वालों ने पूछा येह क्या है ? फ़रमाया : "येह सुर्ख़ गन्दुम हैं।" जब उन्हें खोला गया तो वाक़ेई सुर्ख़ गन्दुम थे, जब येह गन्दुम बोए गए तो उन में जड़ से ऊपर तक गेहूं (या'नी कनक) की बालियां लगीं। (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج۷ص ۲۲۸)

येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है।

इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से कई कामों की शुरूआ़त हुई

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कई कामों की शुरूआ़त हुई उन में से 8 येह हैं : ﴿1﴾ सब से पहले

आप عَلَيْهِ السَّلَام ही के बाल सफ़ेद हुए ﴿2﴾ सब से पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام ही ने (सफ़ेद बालों) में मेहंदी और कतम (या'नी नील के पत्तों) का ख़िज़ाब लगाया ﴿3﴾ सब से पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام ही ने सिला हुवा पाजामा पहना ﴿4﴾ सब से पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام ने **मिम्बर** पर ख़ुत्बा पढ़ा ﴿5﴾ सब से पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام ने राहे ख़ुदा में जिहाद किया ﴿6﴾ सब से पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام ने **मेहमान नवाज़ी** या'नी मेहमानी की रस्म शुरूअ़ की ﴿7﴾ सब से पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام ही मुलाक़ात के वक़्त लोगों से गले मिले ﴿8﴾ सब से पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام ही ने **सरीद** तय्यार किया। (शोरबे में भिगोई हुई रोटी को **सरीद** कहते हैं) (مِرقاة ج ٨ ص ٢٦٤ ملخّصًا)

टॉफ़ियां और खट मिट्ठी गोलियां

टॉफ़ियां और खट मिट्ठी गोलियां

अक्सर म-दनी मुन्ने टॉफ़ियां, गोलियां, चॉक्लेट, गोला गन्डा और दीगर रंग बिरंगी मीठी चीज़ें खाने के शौक़ीन होते हैं लेकिन इन चीज़ों के ग़ैर मे'यारी (या'नी घटिया) होने और इन के खाने में बे एह्तियाती बरत्ने के सबब **इन के दांतों, गले, सीने, मे'दे और आंतों वग़ैरा को नुक़्सान पहुंचने का ख़त़रा रहता है।** लिहाज़ा मुसल्मानों को नफ़्अ़ पहुंचाने की निय्यत से टॉफ़ियों वग़ैरा के बारे में मुख़्तलिफ़ वेब साइट्स से ह़ासिल कर्दा त़िब्बी तह़क़ीक़ात कहीं कहीं अल्फ़ाज़ वग़ैरा की तब्दीली के साथ पेशे ख़िदमत हैं :

दांतों की टूट फूट

ईनेमल (Enamel) नामी एक मज़्बूत चमक्दार तह दांतों पर होती है जो इन की हिफ़ाज़त करती है, मुज़िर्रे सिह्हत चीज़ खाने के सबब मुंह में बेक्टेरिया (या'नी जरासीम) पैदा होते हैं जो इस तह को नुक़्सान पहुंचाते हैं, जिस की वज्ह से **दांतों में टूट फूट** शुरूअ़ हो जाती है।

मुंह में छाले और गले में सोज़िश की एक वज्ह

टोफ़ियां वग़ैरा खाने के बा'द बच्चे उ़मूमन दांत साफ़ नहीं करते जिस की वज्ह से मिठास दांतों में जम जाती है और जरासीम पलने शुरूअ़ हो जाते हैं जो कि दांतों में कीड़ा लगने, **मुंह में छालों** और **गले में**

तक्लीफ़ का सबब बनते हैं।

नाक़िस खट मिट्ठी गोलियों की तबाह कारियां

पाकिस्तान के गली महल्लों में बिकने वाली अक्सर **टॉफ़ियां** और खट मिठ्ठी गोलियां नाक़िस और घटिया होती हैं चुनान्चे एक अख़्बारी रिपोर्ट के मुताबिक़ मिनी (या'नी छोटी) फ़ेक्टरियों में नाक़िस ख़ाम माल से तय्यार शुदा **गोलियां टॉफ़ियां** बच्चों की सिह्हत पर ख़तरनाक अ-सरात मुरत्तब कर रही हैं। घरों में क़ाइम इन फ़ेक्टरियों में गोलियों टॉफ़ियों की तय्यारी में ग्लूकोज़, सेक्रीन और तीसरे द-रजे की (या'नी Substandard/Third class) अश्या इस्ति'माल की जाती हैं। तय्यार गोलियों टॉफ़ियों को दीहातों में (भी) सप्लाय किया जाता है, येही वज्ह है कि गाउं गोठों

के बच्चों में **दांतों की बीमारियां** तश्वीश नाक हद तक बढ़ती जा रही हैं। (रोज़नामा दुन्या से माख़ूज़)

केक, बिस्किट, आइसक्रीम वग़ैरा से पेशाब में शकर आने का मरज़.....

बिस्किट, आइसक्रीम और एनर्जी ड्रिंक्स में मिठास के लिये इस्ति'माल होने वाले केमीकल दुन्या भर में ज़ियाबीतुस (Diabetes) का बाइस बन रहे हैं। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी (बरतानिया) में की गई तह़क़ीक़ के मुताबिक़ ग़िज़ाई मस्नूआ़त (Food Products) बनाने वाली कम्पनियां अपनी मस्नूआ़त (Products) को मीठा बनाने के लिये ऐसा केमीकल इस्ति'माल करती हैं जो ज़ियाबीतुस (या'नी पेशाब में

शकर आने की बीमारी) का बाइस बनता है। तह़क़ीक़ में 42 ममालिक में बनाए जाने वाले बिस्किट, केक और ज्यूस का कीमियाई तजज़िया किया गया, कीमियावी माद्दे "हाई फ्रुक्टोज़ सीरप" (या'नी शकर की एक क़िस्म) से ज़ियाबीतुस (या'नी मीठी पेशाब) का मरज़ लाहिक़ होने का ख़त़रा बढ़ जाता है। तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ जिन ममालिक में बेकरी की चीज़ें ज़ियादा इस्ति'माल की जाती हैं वहां लोगों में मरज़ की शर्ह आठ फ़ीसद ज़ियादा थी ! बेकरी की मस्नूआ़त इस्ति'माल करने वाले ममालिक में अमरीका सरे फ़ेहरिस्त है जहां हर शख़्स सालाना औ-सत़न (Average) 55 पाउन्ड मीठी चीज़ें इस्ति'माल करता है जब कि बरत़ानिया में इस का इस्ति'माल सब से कम है जहां एक शख़्स औ-सत़न एक पाउंन्ड बेकरी की अश्या सालाना

इस्ति'माल करता है। (दुन्या न्यूज़ ऑन लाइन)

17 क़िस्म की बीमारियों का ख़तरा

चॉक्लेट में दीगर अज्ज़ा के इलावा **केफ़ीन** (Caffeine) पाई जाती है, **मिल्क चॉक्लेट** के मुक़ाबले में **काले चॉक्लेट** में चार गुना ज़ियादा केफ़ीन होती है ! केफ़ीन वक़्ती तौ़र पर दर्द और थकन वग़ैरा ज़रूर दूर करती है मगर इस का ज़ियादा इस्ति'माल नुक़्सान देह होता है। **केफ़ीन के आ़दी** अफ़राद में येह अमराज़ पैदा हो सकते हैं : थकन, चिड़चिड़ा पन, बार बार पेशाब आना, पेशाब और फुज़्ले के ज़रीए केल्शियम ज़ियादा निकल जाना, हाज़िमे की ख़राबियां, बड़ी आंत में सूजन, बवासीर की शिद्दत, दिल की धड़कन में इज़ाफ़ा और बे क़ाइ-दगी, हाई ब्लड प्रेशर,

दिल की जलन, मे'दे का अल्सर, नींद के अन्दाज़ और अवक़ात की तब्दीलियां (या'नी कभी नींद ज़ियादा आना, तो कभी कम, बे वक़्त नींद आना, सोने के अवक़ात में नींद न आना, मा'मूली से शोर पर आंख खुल जाना वग़ैरा।) पूरे या आधे सर में दर्द, घबराहट, मायूसी (डिप्रेशन, Disappointment) जिगर (Liver) और गुर्दे की बीमारियां वग़ैरा। चॉक्लेट के इलावा, कोला ड्रिंक्स, चाय, कॉफ़ी, कोको और दर्द दूर करने वाली गोलियों में भी **केफ़ीन** पाई जाती है।

(तिब की किताब, "क़ातिल ग़िज़ाएं" से माख़ूज़)

तो फिर म-दनी मुन्नों को क्या खिलाएं ?

सिह्हत के लिये ख़त़रा बनने वाली खट मिठ्ठी गोलियों और टॉफ़ियों वग़ैरा की जगह म-दनी मुन्नों

और म-दनी मुन्नियों को इन की उ़म्र वग़ैरा के लिहाज़ से मुनासिब मिक़्दार में या त़बीब के मश्वरे के मुत़ाबिक़ फल और ख़ुश्क मेवे (ड्राई फ्रूट) खिलाइये और आप ख़ुद भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई इन ने'मतों से फ़ाएदा उठाइये। चन्द ख़ुश्क मेवों के फ़वाइद पेशे ख़िदमत हैं :

बादाम (Almond)

﴾1﴿ तमाम **बादाम** कोलेस्ट्रोल से पाक होते हैं ﴾2﴿ कड़वे **बादाम** या ईरानी बादाम "केन्सर" की रोकथाम की ख़ुसूसिय्यत रखते हैं ﴾3﴿ ख़ुश्क ख़ोबानी के **बादाम** खाने से ज़ख़्म भर जाते हैं ﴾4﴿ **बादाम** में "केल्शियम" होता है जो कि हड्डियों के लिये ज़रूरी है

《5》 बादाम खाने से तेज़ाबियत दूर होती और अमराज़े क़ल्ब का ख़त़रा कम होता है **《6》 बादाम** केन्सर और मोतिया बिन्द के ख़त़रे में कमी करता है **《7》 बादाम** **LDL** कोलेस्ट्रोल की सत़्ह़ कम करता है **《8》 बादाम** इजाबत साफ़ लाता और क़ब्ज़ दूर करता है **《9》 बादाम** खाने से मोटापे का ख़त़रा भी कम होता है **《10》 बादाम** बालों और जिल्द (Skin) के लिये मुफ़ीद है और रंगत भी निखारता है **《11》 बादाम** के तेल की पाबन्दी से मालिश जिल्द की खुश्की, कीलों, झुर्रियों और मस्सों की रोकथाम करती है **《12》 बादाम** बाल झड़ने के मरज़ के लिये रुकावट है **《13》 बादाम** बफ़ा (या'नी सरे इन्सानी पर होने वाली खुश्की के सफ़ेद छिलके)

दूर करता है और बाल सफ़ेद होने से रोकता है ﴾14﴿ **बादाम** आंखों की बीनाई के लिये मुफ़ीद है ﴾15﴿ रोज़ाना रात को सात दाने **बादाम** और 21 दाने किशमिश या'नी सूखे हुए अंगूर (छोटे बड़े कोई से भी हों) पानी में भिगो दीजिये और येह दोनों चीज़ें सुब्ह दूध के साथ और अच्छी त़रह़ चबा कर खा लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर दूर होगा, कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये भी येह नुस्ख़ा मुफ़ीद है ﴾16﴿ इन्जीर और **बादाम** मिला कर खाने से पेट की अक्सर बीमारियां दूर होती हैं।

ज़ियादा गर दिमाग़ी है तेरा काम
तो खाया कर मिला कर शह्द बादाम

पिस्ते (Pistachio)

पिस्ता दिलो दिमाग़ को क़ुव्वत बख़्शता है। बदन को मोटा करता और गुर्दे की कमज़ोरी को दूर करता है। ज़ेहन और हाफ़िज़ा मज़्बूत करता है। खांसी के इलाज के लिये **पिस्ता** मुफ़ीद है। (کتاب المفردات ص ۱۵۶)

काजू (Cashew)

काजू जिस्म को ग़िज़ाइयत और दिमाग़ को ताक़त देता है। बदन को मोटा करता है। नहार मुंह शहद के साथ **काजू** खाना दाफ़ेए निस्यान (या'नी भूलने की बीमारी दूर करने वाला) है। एक कोढ़ी (सफ़ेद दाग़ का मरीज़) सिर्फ़ **काजू** ब कसरत खाने से सिह्हत याब हो गया। (ایضاً ص ۳۳۶)

चिलग़ोज़े (Pine Nuts)

चिलग़ोज़ा बल्ग़म दूर करता और बदन को मोटा करता है। भूक बढ़ाता है। दिल और पठ्ठों को क़ुव्वत बख़्शता है। छिले हुए **चिलग़ोज़े** का शीरा बना कर थोड़ा सा शहद शामिल कर के चाटना बल्ग़मी खांसी के लिये मुफ़ीद है। (ایضاً ص۲۱۱)

मूंगफली (Peanut)

मूंगफली के बीजों में बहुत ग़िज़ाइयत होती है। **मूंगफली** अपने फ़वाइद में काजू और अख़्रोट वग़ैरा से कम नहीं है। **मूंगफली** का तेल रोग़ने ज़ैतून का उ़म्दा बदल है। (ایضاً ص۴۷۶)

मिस्री (Rock Sugar)

मिस्री आंखों की बीनाई के लिये मुफ़ीद है। गर्म पानी के साथ बतौरे शरबत आवाज़ को साफ़ करती है। आंख में डालने से जाला काटती है। (ایضاً ص ٤٦١)

जो बात कहो मुंह से वोह अच्छी हो भली हो
खट्टी न हो कड़वी न हो, मिस्री की डली हो

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6)

नारियल, खोपरा (Coconut)

मिस्री के साथ हर रोज़ नहार मुंह एक तोला **खोपरा** खाना बीनाई को कुव्वत देता है। पेट को नर्म करता और भूक बढ़ाता है। **खोपरे का तेल** सर में लगाने से बाल बढ़ते हैं और येह दिमाग़ के लिये मुफ़ीद है।

छुहारे (Dried Dates)

छुहारा साफ़ ख़ून पैदा करता, भूक में इज़ाफ़ा करता और बदन को मोटा करता है, कमर और गुर्दे को त़ाक़त देता है। (کتاب المفردات ص ۲۲۲)

अख़रोट (Walnut)

अख़रोट बद हज़्मी को दूर करता है, **अख़रोट** का भुना हुवा मग़्ज़ सर्द खांसी के लिये मुफ़ीद है । **अख़रोट** को चबा कर दाद पर लगाया जाए तो दाद का निशान मिट जाता है। (ایضاً ص ۶۸)

किशमिश (Raisin)
मुनक़्क़ा (Currant)

ह़दीसे पाक में है : मुनक़्क़ा खाओ, येह बेहतरीन खाना है, आ'साब (या'नी पट्ठों) को मज़्बूत़ करता, ग़ुस्से को ठन्डा करता, मुंह को ख़ुश्बूदार करता और बल्ग़म को दूर करता है।[1] दूसरी रिवायत में येह भी है कि (मुनक़्क़ा) ग़म को दूर करता है।

(اَلطِّبُّ النَّبَوِی لِاَبِی نُعَیم ص۳۷۹ حدیث۳۱۹ مُلَخَّصًا)

छोटा अंगूर ख़ुश्क हो कर **किशमिश** और बड़ा अंगूर सूख कर **मुनक़्क़ा** बनता है। **मुनक़्क़ा** कम वज़्न बदन को मोटा करता और इस के बीज मे'दे की इस्लाह़ करते हैं। अनार के दानों के साथ **मुनक़्क़ा** खाना

مدینہ

1 : اَلطِّبُّ النَّبَوِی لِاَبِی نُعَیم ص۷۱۹ حدیث ۸۰۹ مُلَخَّصًا

हाज़िमे के लिये मुफ़ीद है। **मुनक़्क़े** का गूदा फेफड़ों के लिये इक्सीर है। **मुनक़्क़ा** दवा भी है और गिज़ा भी, इस को चाहें तो यूंही या चाहें तो छिलका उतार कर मुनासिब मिक़्दार में खा लीजिये, मश्हूर मुहद्दिस ह़ज़रते इमाम ज़ोहरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : जिस को अह़ादीसे मुबा-रका ह़िफ़्ज़ करने का शौक़ हो वोह (मुनासिब मिक़्दार में) **मुनक़्क़ा** खाए।[1] **मुनक़्क़ा** बीज समेत भी खा सकते हैं बल्कि **मुनक़्क़े** के बीज मे'दे की इस्लाह़ करते हैं। **मुनक़्क़े** चन्द घन्टे पानी में भिगो कर रख दीजिये फिर उन का छिलका उतार कर गूदा निकाल लीजिये। **मुनक़्क़े** का गूदा फेफड़ों के लिये इक्सीर और पुरानी खांसी के लिये मुफ़ीद है। येह गुर्दे और मसाने के

1 : الجامع لاَخلاق الراوی ص۴۰۳

दर्द को मिटाता, जिगर और तिल्ली को ताक़त देता, पेट को नर्म करता, मे'दा मज़्बूत करता और हाज़िमा दुरुस्त करता है।

सुर्ख़ मुनक़्क़े (Red Currant)

हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है : जो रोज़ाना **सुर्ख़ मुनक़्क़े** 21 अ़दद खा लिया करे वोह जिस्मानी अमराज़ से महफ़ूज़ रहेगा। (الطِّبُّ النَّبَوِی لِاَبِی نُعَیم ص۷۲۱حدیث۸۱۳)

इन्जीर (Fig)

हदीसे पाक में है : "इन्जीर खाओ ! क्यूं कि येह बवासीर को ख़त्म करती और निक़्रिस (या'नी एक दर्द जो टख़्नों और पाउं की उंग्लियों में होता है)

में मुफ़ीद है।" (اَیضًا ص۴۸۵ حدیث۴۶۷ مُلَخَّصًا)

﴿1﴾ **इन्जीर** में दीगर तमाम फलों के मुक़ाबले में बेहतर ग़िज़ाइयत है ﴿2﴾ **इन्जीर** बवासीर को ख़त्म कर देता और जोड़ों के दर्द के लिये मुफ़ीद है ﴿3﴾ **इन्जीर** नहार मुंह खाने के अ़जीबो ग़रीब फ़वाइद हैं ﴿4﴾ जिन के पेट में बोझ हो जाता हो वोह हर बार खाना खाने के बा'द तीन अ़दद **इन्जीर** खा लें ﴿5﴾ **इन्जीर** मोटे पेट को छोटा करता और मोटापा दूर करता है ﴿6﴾ **इन्जीर** में खांसी और दमे का इलाज है ﴿7﴾ **इन्जीर** चेहरे का रंग निखारता है ﴿8﴾ **इन्जीर** प्यास बुझाता है।

(घरेलू इलाज, स. 111)

आंखों का लज़ीज़ चूरन

सोंफ़, मिस्री और ईरानी बादाम तीनों हम वज़्न ले कर अच्छी त़रह़ बारीक पीस कर यक्जान (MIX) कर के बड़े मुंह की बोतल में मह़फ़ूज़ कर लीजिये और बिला नाग़ा रोज़ाना नहार मुंह एक चाय की चम्मच बिग़ैर पानी के खा लीजिये (एक चम्मच से कुछ ज़ियादा खाने में भी हरज नहीं) त़वील अ़र्सा इस्ति'माल करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आंखों की बीनाई को फ़ाएदा होगा। **तजरिबा :** एक म-दनी मुन्नी की आंखों में पानी आता था, बिल आख़िर आंखों के डॉक्टर से वक़्त ले लिया था, मैं ने येही लज़ीज़ चूरन पेश किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ एक आध बार खाने ही से उस की बीमारी जाती रही और डॉक्टर के पास जाने की नौबत ही न आई। जिन को तक्लीफ़ न हो वोह भी मुस्तक़िल इस्ति'माल कर सकते हैं। (घरेलू इलाज, स. 33)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

22 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 सि.हि.

18-09-2014

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मुंह में छाले और गले में सोज़िश की एक वज्ह	27
तीनों रात एक त़रह़ का ख़्वाब	2	नाक़िस खट मिठ्ठी गोलियों की तबाह कारियां	28
बेटे की क़ुरबानी से रोकने की शैत़ान की नाकाम कोशिशें	3	केक, बिस्किट, आइसक्रीम वग़ैरा से.....	29
शैत़ान को कंकरियां मारीं	7	17 क़िस्म की बीमारियों का ख़त़रा	31
बेटा क़ुरबानी के लिये तय्यार	8	तो फिर म-दनी मुन्नों को क्या खिलाएं ?	32
मुझे रस्सियों से मज़्बूत़ बांध दीजिये	10	बादाम	33
जन्नत का मेंढा	13	पिस्ते	36
जन्नती मेंढे के गोश्त का क्या हुवा ?	14	काजू	36
जन्नती मेंढे के सींग	15	चिलग़ोज़े	37
क'बा शरीफ़ में आग कब और किस त़रह़ लगी ?	16	मूंगफली	37
क्या हर कोई ख़्वाब देख कर अपना बेटा ज़ब्ह कर सकता है ?	19	मिस्री	38
इस्माईल के मा'ना	20	नारियल, खोपरा	38
ह़ज़रते इब्राहीम के 10 मख़्सूस फ़ज़ाइल	21	छुहारे	39
शेर क़दम चाटने लगे	23	अख़्रोट	39
रैत की बोरियों से सुर्ख़ गन्दुम निकले !	23	किशमिश, मुनक़्क़ा	40
इब्राहीम से कई कामों की शुरूआत हुई	24	सुर्ख़ मुनक़्क़े	42
टोफ़ियां और खट मिठ्ठी गोलियां	26	इन्जीर	42
दांतों की टूट फूट	27	आंखों का लज़ीज़ चूरन	44

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قران مجید		الزہد	دارالغد الجدید المنصورۃ مصر
تفسیر طبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الطب النبوی	دارابن حزم بیروت
تفسیر قرطبی	دارالفکر بیروت	الجامع لاخلاق الراوی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	ابن بشکوال	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر خازن	مصر	مرقاۃ	دارالفکر بیروت
تفسیر جمل	باب المدینہ کراچی	مراۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
تفسیر نعیمی	نعیمی کتب خانہ گجرات	بنایہ شرح ہدایہ	مدینۃ الاولیاء ملتان
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت	کتاب المفردات	مدینۃ الاولیاء ملتان
مصنف ابن ابی شیبہ	دارالفکر بیروت	گھریلو علاج	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब ख़ूब सवाब कमाइये।

मां को जवाब न देने वाला गूंगा हो गया

मन्क़ूल है : एक शख़्स को उस की मां ने आवाज़ दी लेकिन उस ने जवाब न दिया इस पर उस की मां ने उसे बद दुआ दी तो वोह **गूंगा** हो गया।

(بِرُّالوالدَین لِلطَّرطُوشی ص۷۹)

मक-त-बतुल मदीना दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net